श्यामल दण्डकम्

मनिख्य वीणां उपललयन्थिं,
मदलसं मञ्जुल वाग विलासं,
महेन्द्र नील ध्युथि कोमलन्गीं,
मथाङ्ग कन्यां मनसा स्मरामि. 1

चथुर्भुजे चन्द्र कला वथंसे,
कुचोन्नाथे कुंकुम राग सोने,
पुन्द्रेक्षु पसन्गुस पुष्प बन,
हस्थे नमस्थे जगदैक मथ. 2

मथ मरकाथ श्याम, मथाङ्गी मध शालिनी,
कुर्यतः कदक्षं कल्याणि कदम्भ वन वासिनि. 3

जय मथाङ्ग थानये, जय नीलोल्पल ध्युथे,
जय संगीथ रसिके, जय लीला शुक प्रिये. 4

दण्डकं

जय जननि,सुधा समुद्रन्थर उधुयन्मनि धीप संरूद विल्वदवि मध्यकल्पध्रुम कल्प कदम्भ वास प्रिये,
क्रिथवास प्रिये,सर्व लोक प्रिये.

सदररब्ध संगीथ संभावना अ संभ्रम लोल नीपस्रगा बध चूली सनदथ्रिके,
सनुमतः पुथ्रिके,

शेखरी भूथ शीथंसु लेक मयूखवलिबध सुस्निग्ध नीलालक श्रेणी स्निग्गरिथे,
लोक संभविथे,

काम लीला धनुसन्निभा ब्रुल्लथ पुष्प संदोह संदेह कृल्लोचने,
वाक् सुधा सेचने,

चारु गोर्चन पङ्ग केली ललभिरमे,
सुरमे,
रमे,

प्रोल्लसद्वालिका मोउक्थिक स्रेनिक चन्द्रिका मन्दलोथ्भसि लवन्यगन्दस्थालन्यथ कस्थुरिक पथर रेखा समुद्भूथ सौरभ्यसम्भ्रन्थ ब्रुन्गन्गणा गीथा संथ्री भवन मन्त्र थन्थ्रीस्वरे,
श्रुस्वरे,
हस्वरे,

वल्लकी वदन प्रक्रिया लोल थाली धल बध थादड्ग भूषा विसेशन्विथे,
सिधा संमनिथे,

दिव्य हलमधो द्वेलहेलल सचक्षुरन्धोलन श्री समक्षिप्थ करनैक नीलोथ्फले,
पूरिथसेष लोकपि वञ्चपले,
स्रीफले

श्वेद बिन्दुल्ल सथ्फल लावण्य निष्यन्ध संधोह संदेह कृन्नसिक मोउक्थिके,
सर्व विस्वथ्मिके,
कलिके,

मुग्ध मन्दस्मिथोधर व्यक्था स्फुरल् पूग थंबूला कर्पूर गन्दोल्करे,
ज्ञान मुध्रकरे,
सर्वसंपथ्करे,
अग्रबस्वथ्करे,
स्रीकरे,

कुण्ड पुष्प ध्युथि स्निग्ध दन्थ वाली निर्मल लोल कल्लोल,
संमेलनस्मेर सोना धरे,
चारु वीणा धरे,
अक्व बिम्भ धरे,

श्रुललिथयौअनरम्भ चन्द्रयोध्वेला लावण्य दुघ्दर्नवविर् भव थ कंभु बिभोक ब्रुतः कन्धरे,
सथ्कल मन्धिरे,
मन्धरे,

दिव्य रथन प्रभा बन्दुःरचान्न हारधि भूषा समुध्योथ मननवध्यड्ग शोभे,
शुभे,

रथन केयूर रस्मि चद पल्लव प्रोल्लसतः धोर्लथ रजिथे,
योगिभि पूजिथे,

विस्व दिन्ग मण्डल व्यापि मनिख्य थेज स्पुरतः कन्कनलन्गृथे,
विभ्रमलन्कृथे,
साधुभि पूजिथे,

वसररम्भ वेला संज्रुम्भमन अरविन्द प्रथि द्वन्द्वि पनिद्वये,
संथोथ्ध्यद्धये,
ऑवये,

दिव्यरथ्नोर्मिक धीथिथि स्थोम संध्यया मनन्गुली पाल वोध्यन्न खेन्दु प्रभा मण्डले,
संनाध घन्डले,
चितः प्रभा मण्डले,
प्रोल्लसतः खुण्डले,

थारकजल नीकस हरा वाली स्मेर चारु स्थान भोग भरनमन्मध्यवल्ली वाली स्चेधा वीची समुध्यतः
समुल्लस सन्दर्सिथकरसौन्दर्य रथन करे,
वल्लेविब्रुथ्करे,
किंकर स्रीकरे,

हेमकुम्भोपमोथुङ्ग वक्षोज पर्व नंरे,
त्रिलोकवनंरे,

लसद्व्रुथ गम्भीर नाभी सरस्थीर सैवल संगकर स्याम रोमावली भूषणे,
मन्जु संभाषणे,

चारु सिञ्चतः कति सूत्र निर्बस्थिनङ्ग लीला धनु सिन्चिनीदंबरे,
दिव्य रथ्नंबरे,

पद्मरघोल्लसन्मेखाल मोउक्थि श्रेणी शोबजिथ स्वर्न भू ब्रुथाले.
चन्द्रिका सीथाले,

विकसिथ नवकिंसुक थर दिव्यंसुक चान्न चरूरु शोभा पर भूथ सिन्धूर सोनाय मनेन्द्र मातङ्ग हस्थार्गले,
वैभवन अर्गले,
स्यमले,

कोमल स्निघ्ध नीलोथ्पलोथ्पदिथ अनङ्ग थुन्नेर संगकरे दर जन्गलाथे,
चारु लीला गथे,

नंरदिक पाल सीमन्थिनि कुन्थलस्निघ्ध नील प्रभा पुञ्ज संजथ दुर्वन्गुरसङ्गी सारङ्ग संयोग रिन्गन्न खेन्दुज्ज्वले,
रोज्ज्वले,
निर्मले,

रत्नवदेवेस लक्ष्मीस भूथेस थोयेस वनीस कीनास दैथ्येस यक्षेसवय्वग्नि कोटीर मनिख्य संगुष्ट बल थापोधम लक्षर सरुन्यथरुन्य लक्ष्मी ग्रहीथन्ग्रि पद्मे,
सुपद्मे,
उमे,

सुरुचिरा नवरथ्न पीत स्थिथे,
सुस्थिथे,
रथन पद्मासने,
रथन सिंहासने,
संकपद्मद्वयोपस्निथे,
विश्रुथे,

थथर विग्नेस दुर्ग वतु क्सेथ्र पत्नैर्युथे,
मथ मथाङ्ग कन्या समूहन्विथे,
भैरवैर अष्टाभिर वेश्तिथे,

मञ्जुल मेनाकध्यङ्ग नमनिथे,
देवी वमधिभि शक्थीहि सेविथे,
मथुर्क मण्डलैर मन्दिथे,
यक्ष गन्धर्व सिधन्गणा मण्डलैर अर्चिथे,
पञ्च बनथ्मिके,
पञ्च बनेनरथ्य च संभविथे,
प्रीथिभजा वसन्थेन चानन्दिथे,

भक्थि बाजं परम् श्रेयसे,
कल्पसे योगिनां मनसे ध्योत्हसे,
गीथा विध्य विनोधति तृष्णेन कृष्णेन संपूज्यसे,
भक्थिमस्चेदसा वेधस स्थूयसे,
विस्व ह्रुध्येन वध्येन विध्यधरैर घीयसे,

श्रवण हरण दक्शिनक्वनय वीणाय किन्नरैर घीयसे,

यक्ष गन्दर्व सिधन्गणा मण्डलैर अर्च्यसे,
सर्व सोउभग्य वन्चवहिर्वधुधिर् सुराणां समाराध्यसे,

सर्व विध्य विसेशथ्मकं, चदु गथ समुचारणं,
कन्द मुलोल्ल सद्वर्न राजि त्रयं,
कोमल स्यमलो धर पक्ष द्वयम्,
थुण्ड शोभथि धूरि भवतः किसुकं थं शुकं,
ललयन्थि परिक्रीदसे,

पाणि पद्मद्वये नक्षमलमपिस्प्तकीं ज्ननसरथ्मकं पुस्तकन्गुसं पास बिब्रथियेनसन्चिन्थ्य्से, तस्य वक्थ्रन्थरल् गद्य पद्यथ्मिक भरथिनिस्सरेतः,
येन वा यवक भक्रुइथीर् बव्यसे तस्य वस्यभवन्थि स्थ्रिय पुरुष येन वा सथकुम्भद्युथिर भावयसे सोपिलक्ष्मि सःअसरैर परिक्रीदाथे,

किन्न सिध्येद्वपु श्यामलं कोमलं छन्द्रचूदन्विथम् थावकं ध्यथ थस्य केलिवनं नन्दनं थास्यभद्रसनं भूथालं, थस्य घीर देवथा किंकरी थस्य चज्ञाकरिस्री स्वयम्,

सर्व थीर्थथ्मिके,
सर्व मन्त्रथ्मिके,
सर्व यन्त्रथ्मिके,
सर्व शक्थ्यथ्मिके,
सर्व पीदथ्मिके,
सर्व थथ्वथ्मिके,
सर्व विध्यथ्मिके,
सर्व योगथ्मिके,
सर्व नदथ्मिके,
सर्व शब्दथ्मिके,
सर्व विस्वथ्मिके,
सर्व वर्गथ्मिके,
सर्व सर्वथ्मिके,
सर्वगे, सर्व रूपे, जगन मथ्रुके,
पाहि मां, पाहि मां, पाहि मां,
देवी थुभ्यं नाम, देवी थुभ्यं नाम. देवी थुभ्यं नाम.